हिंदी और भारतीय भाषाओं का अंतःसंबंध : हिंदी-कोंकणी अनुवाद संदर्भ

❑ डॉ. चंद्रलेखा

हमारी भाषा हमारी पहचान होती है। एक तरफ से मनुष्य सभ्यता अर्जित करते हुए भाषा की रचना करता है, दूसरी तरफ से मनुष्य खुद भाषा के द्वारा रचा जाता है। मनुष्य का संसार और समय, इन्हें व्यक्त करने में भाषा खुद गढ़ती जाती है। भाषा सिर्फ लिखित अनुभव ही नहीं होती वह तो दृष्टि, श्रुति, प्रतीति तीनों आयामों को समाहित करती हुई अपनी यात्रा तय करती है। मनुष्य का जीवन आज उसके संवेदन-तंत्र को इतना विकसित कर चुका है कि अगर उसका तालमेल वस्तु-जगत् से न हो सका तो सारे ज्ञान-विज्ञान मनुष्य के लिए बेकार हो जाएंगे। यह संतुलन भी भाषा के द्वारा ही बैठाया जा सकता है। भाषा और मनुष्य का संबंध अन्योन्याश्रित है। अगर हमारी भाषा आज के सायबर दौर में, हमें विज्ञान और टैक्नोलॉजी से जोड़ नहीं पाती तो हम पिछड़ जाएंगे। हमारा जीवन आज टी.वी., कंप्यूटर, टेलीफोन, सेलफोन, इंटरनेट, मीडियम, वैबसाइट, फैक्स, इलैक्ट्रॉनिक मीडिया से इतना मोबाइल हो गया है कि हमारी मोबिलिटी इन सबके बिना बिल्कुल इममोबाइल हो जाती है। 'विश्वग्राम' परिकल्पना मार्शल मैक्लूहान द्वारा दी गई है। हालाँकि हम 'विश्व को परिवार' माननेवाले हैं पर हमारा विचार 'बाज़ारवाद' संदर्भ में नहीं था। विश्वग्राम के चक्र में छोटे और कमज़ोर देश फँसते जा रहे हैं। भूमंडलीकरण की यह अवधारणा 'मनुष्य' को मनुष्य नहीं रहने देती। उसे वस्तु या उपभोक्ता ही बनाकर अपने अर्थतंत्र का ही 'अर्थ'- meaning - सीधा करती है। आर्थिक सहयोग की व्यापकता के दायरे में राजनैतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक संदर्भ भी आ जाते है क्योंकि हमारी संस्कृति का एक

हिस्सा भाषा भी है। कंप्यूटर की भाषा से व्यापार करते करते हम 'विश्वग्राम' वाले 'विश्वभाषा' बनाने की प्रक्रिया में अग्रसर हो रहे हैं। हमारी भाषाओं पर संकट मंडरा रहा है। हर देश को अपनी भाषा और संस्कृति का संकट कचोट रहा है। सायबर चेन के इस दौर में जो भाषाएँ अपने आपको बचा नहीं पाएंगी, वे नष्ट हो जाएंगी।

पूरे विश्व पर आज बिल गैट्स और उसका कंप्यूटर बाज़ारवाद पसारने पर आमादा है। दुनिया के बड़े बड़े देशों में अंग्रेज़ी के माध्यम से ही व्यापार होता है। विभिन्न देशों के बीच आर्थिक संबंधों, सहयोग और विनिमय को व्यापकता मिलने की प्रक्रिया ही भूमंडलीकरण है। यहाँ पर हमें हमारे प्रधानमंत्री अटल बिहारी बाजपेजी जी के उद्‌गारों को भी ध्यान से सुनना होगा। बारह दिसंबर, 2003 को दिल्ली में शांति परिषद् के उद्‌घाटन समारोह में 'पीस डिव्हीडंड प्रोग्रेस फोर इंडिया एण्ड साउथ एशिया' विषय पर बोलते हुए उन्होंने कहा, दक्षिण एशिया के लिए 'साझी मुद्रा' अगर विनिमय में हम लाएं तो हमारे आर्थिक संबंध और मजबूत होंगे। भारत पाकिस्तान में जनसंपर्क बढ़ा है। जैसे जैसे आर्थिक सहयोग बढ़ेगा, अविश्वास का वातावरण कम होगा। कालांतर में खुली सरहद, सुरक्षा, सहकार्य और साझी मुद्रा की ओर हम अग्रसर हो सकते हैं। अमेरिकन डॉलर - पहला विश्व - 'यूरो' - पश्चिमी - दूसरा विश्व और हम दक्षिण एशियावाले तीसरा विश्व अगर अपनी साझी मुद्रा रखें तो आर्थिक लाभ उठा सकते हैं। कहाँ तक बचा जा सकता है ? यह सवाल अपने आप में जवाब भी है कि इस नेटवर्क में 'फिट' हुए बगैर दक्षिण एशियाई देशों के पास कोई चारा बचता ही नहीं। संगठित हो और मुकाबला करो। सहयोग बढ़ाओ यही आर्थिक सायबर चेन - cyber chain है।

आज हर कोई कहता है कि मीडिया के कारण हमारी भाषाएँ बिगड़ रही हैं, उनका सत्यानाश हो रहा है। पर राजेंद्र यादव के शब्दों में कहूँ तो - "भाषाएँ न बिगड़ती हैं न मरती हैं, वे तो मानव समाज की ही तरह विकसित होती हैं। वे घरों, परिवारों, बाज़ारों या दूसरे कामकाजी क्षेत्रों, खेतों, खलिहानों और कारखानों में अपना रूप ग्रहण करती हैं। उन्हें सब से ज़्यादा बदलती हैं औरतें और श्रम से जुड़े लोग। इन सबकी जानकारी किताबी भाषा विशेषज्ञों को नहीं होती। भाषाएँ शुद्‌धता और उत्कृष्टता के आग्रहों में गतिहीन होकर घुटती और अंततः मर जाती हैं।" {हंस नवंबर 2003, पृ. 6}

शुद्‌धता और उत्कृष्टता का दुराग्रह अंग्रेज़ी के साथ भी रहा है। तभी तो बर्नार्ड शॉ ने कहा था कि अंग्रेज़ और अमेरिकन लोग तो एक हैं पर उन्हें साझी भाषा ने बाँट दिया है। हमारी भारतीय भाषाएँ भी आज साझेदारी में ही एक दूसरे से टकराती हैं जिसका मूल

कारण हमारा मीडिया ही है। हमारी मल्टी चैनल्ड ज़िंदगी, हमारी मल्टीपल भाषाओं को, उनके अलग अलग रूपों में, एक दूसरे के अस्तित्व को बचाए रखने में क्या कामयाब हो सकेंगी ?

हिंदी की वैज्ञानिकता :

भारत में वैश्वीकरण, आर्थिक उदारीकरण और निजीकरण के साथ-साथ इंटरनेट, सूचना संचार, हर क्षेत्र में कंप्यूटर का बोलबाला है। अगर हमारे देश में हमें सूचना प्रौद्योगिकी का लाभ हमारे जन-जन तक पहुँचाना हो तो भारतीय भाषाओं में ही पहुँचाना चाहिए। हमारे पास हमारी सब भारतीय भाषाओं को बचाने का एक ही मार्ग है कि किसी एक भारतीय भाषा को बचाया जाए जो सबसे ज़्यादा 'बाज़ारु' भी हो और 'वैज्ञानिक' भी। साथ-साथ उसमें अंग्रेज़ी के सामने टिकने की ताकत भी हो। बाज़ारवाद और उपभोक्ता संस्कृति में फंक्शनल भाषा का महत्व बढ़ जाता है। निश्चित रूप से यहाँ पर हम हिंदी भाषा को ही रख सकते हैं। हमारी संस्कृत वर्ण लिपि वैज्ञानिक तो है ही, साथ साथ अंग्रेज़ी का विज्ञान भंडार अपने आप में समाने के लिए सक्षम भी है।

भारतीय संस्थाओं ने डॉस परिवेश के अंतर्गत शब्द संसाधन (word processing) के पैकेज विकसित किए हैं। एएलपी, मल्टीवर्ड, शब्द-रत्न, शब्दमाला, अक्षर, बाइस्क्रिप्ट आदि रूपों में ये पैकेज उपलब्ध हैं। आई.बी.एम. टाटा कंपनी के आर.के.कंप्यूटर्स ने "हिंदी डॉस" नाम से ऐसी प्रणाली का विकास किया है, जिसके 'कमांड' और 'मेन्यू' भी हिंदी में दिए गए हैं। हमारे सेलफोन में, बैंकिंग के एटीएम सेंटर पर भी अंग्रेज़ी हिंदी के विकल्प आ गए हैं। आजकल ज़माना अलग-अलग नेटवर्क्स का है, बहुराष्ट्रीय कंपनियों का है। इंटरनेट के जाल में, कंप्यूटर्स के चौकोर स्क्रीन पर हमारा आर्थिक, वैज्ञानिक, सामाजिक ज्ञान डिस्प्ले किया जाता है। बटन दबाते ही खजाने के रूप में जानकारियों का अंबार लग जाता है। आज अंग्रेज़ी और हिंदी दो भाषाएँ ऐसी हैं जो अपना शुद्ध सात्विक रूप छोड़कर आम जनता के कामकाज की, व्यापार की भाषाएँ बनती जा रही हैं। संचार माध्यमों में वे अपना हिंगलिश रूप निखार रही हैं। फंक्शनल भाषाएँ बन रही हैं। सुगम संगीत, हिंदी और अंग्रेज़ी इन तीनों का बोलबाला है। जो बाज़ार में चलेगा सो बचेगा। इन्हीं से शिष्ट भाषा का विकास होता है। इस वर्ष ऑक्सफोर्ड के अंग्रेज़ी कोश में दक्षिण एशियाई भाषाओं के करीबन चार हज़ार शब्द घुस गए हैं। यही स्थिति हमारी हिंदी और भारतीय भाषाओं की है। ज़ाहिर है अंग्रेज़ी हमारी संस्कृति को बचा नहीं सकती। ज्ञान-विज्ञान, सूचना प्रौद्योगिकी की भाषा होते हुए भी अंग्रेज़ी हमारी भारतीय संस्कृति को बचाने में सक्षम नहीं

हो सकती। अगर हम हमारी हिंदी को विस्तृत कर सकें तो हमारी भारतीय भाषाओं को बचाया जा सकता है।

विश्व का ज्ञान संजोकर हमें अंग्रेज़ी से हिंदी में लाना है और अपनी-अपनी भाषाओं में संजोकर उसे सामान्य जन तक पहुँचाना है। उसी तरह जनजीवन और संस्कृति उन्हीं की भाषाओं से लेकर हिंदी के द्वारा अंग्रेज़ी में पहुँचाना है। इस तरह हमारी हिंदी समृद्ध होगी तथा हमारा प्रतिनिधित्व करने में सफल भी होगी।

हमारी बहुभाषिकता और बहुसांस्कृतिकता

हमारा राष्ट्र तो एक है पर हमारी भाषाएँ, समाज, संस्कृति, उसकी संहिता, अंतरसंहितात्मकता बहुआयामी है। हमारी अलग-अलग भाषाएँ जो भारतीय संस्कृति को वहन करती हैं उनमें से चार-पाँच भाषाओं को छोड़कर बाकी भाषाओं के बारे में हमारी जानकारी बहुत कम होती है। चाहे हम इसे अंग्रेज़ी भाषा के माध्यम से जाने या फिर हमारी हिंदी भाषा का सेतु बनाकर हमारी इंद्रधनुषी सामासिक संस्कृति के बारे में जाने। अनुवाद को, अगर हमारी पाठशालाओं और कॉलेजों में हम सही मायने में जगह दें तो हम अपनी विविधता को समझने में कामयाब हो सकते है। हमारी हिंदी को अंग्रेज़ी से कोई खतरा नहीं है। अगर खतरा है तो संकुचित भाषावादियों से। भाषा तो हमें अपना उद्भव और विकास तथा उसका उत्क्रांतित स्वरूप समझाती है। हमारी बहुभाषिकता को समझे बिना हम अपने ज्ञान संवर्धन को भी समझ नहीं पाएंगे। हमारा ज्ञान संवर्धन ही नहीं पर भाषा में हमारी उत्क्रांति भी निहित होती है। गतिशीलता, परिवर्तनशीलता, प्रवाहमयता भाषा की प्रकृति है। जिस तरह हरेक प्रदेश की प्रकृति चाहे शीतकटिबंधीय हो या समशीतोष्ण या फिर उष्णकटिबंधीय प्रकृति हो, अपने समय में अपने पेड़-पौधों की विविधता, उसकी आनुवांशिक या औषधीय चिकित्सा शास्त्र की पद्धति, अपने आनेवाले समय में अपनी समस्याएँ और उसका समाधान खोजने में सक्षम होती है उसी तरह हमारी भाषागत बहुलता हमें अपने समय में उनके प्रवाहमय स्वरूप में नई दार्शनिकता दे सकती है। नए वैज्ञानिक रूपक खोजने में हमारी मदद कर सकती है। भूमंडलीकरण के इस दौर में जब पूरा ब्रह्मांड एक ग्लोब बन गया है तो विश्व की भाषाओं में बदलाव आ रहे हैं। विश्व के अंत:संबंधों में परिवर्तन, हमें अपनी भाषाओं के अंत:संबंधों को परिवर्तित रूप में देखने के लिए बाध्य करते हैं। हमारी विविधतावादी प्रकृति का समस्वरीय स्पंदन हमें प्राकृतिक रूप में, अपनी संस्कृति के पर्यावरण में, नए विकल्प दे सकता हैं। हमारी बहुआयामी संस्कृति हमें अपनी ही जड़ों से नया मेडीशनल प्लांटस दे सकती है, जिसके सहारे हम भूमंडलीकरण के चुनाव

में अपने आपको नए रूप में ढालने में कामयाब हो जाएंगे। बहाव जीवन है, बहाव भाषा है तथा संस्कृति इन्हीं से जुड़ी है।

हिंदी और भारतीय भाषाओं में अंत:संबंधों का नेटवर्क : उसमें अनुवाद की भूमिका

जहाँ तक अनुवाद शब्द का ताल्लुक है हमें मानना होगा कि संस्कृत काल में इस शब्द का प्रयोग पाया नहीं जाता। अगर विष्णुशास्त्री चिपलूणकर के मत से यही भारतीय इतिहास चेतना है तो उसको स्वीकार करना ही होगा कि 'भाषांतर' शब्द अंग्रेज़ी से रूपांतरित प्रतीत होता है। "वैसे Translation शब्द का अर्थ बहुआयामिता में विकसित हुआ है। पर हमारा अनुवाद चिंतन भारतीय इतिहास चेतना में अंत:भाषिक अनुवाद है- जैसे संस्कृत काव्य का अध्यापन करनेवाले आचार्य काव्योच्चारण के बाद उसका गद्यान्वय सिखाते थे।" ['अनुवाद सैद्धांतिकी' ले. प्रदीप सक्सेना, पृ. 22]

हर प्रदेश का इतिहास अपने भौगोलिक दायरे में अपनी परिस्थिति अनुसार मनुष्य की मानस चेतना के अनुरूप आकार पाकर विकसित होता है। आज ज़रूरत है अनुमान और भावना को निर्णय न बनाकर, भाषा-विज्ञान का सहारा लेकर वैज्ञानिक पद्धति से जाँचकर, अपनी इतिहास-चेतना को समझने की तथा बिना किसी पक्षपात के इतिहास के न्याय में निष्ठा रखकर उन ऐतिहासिक सूत्रों का विश्लेषण करके न्याय करने की। प्रदीप सक्सेना अपनी पुस्तक में अनुवादक चिंतक आर. रघुनाथराव का उल्लेख करते हैं और उनके व्याख्यान - The meaning of the word translation - में आठ अर्थों को बाकायदा प्रस्तुत करके संस्कृत के अर्थ 'पीछे' और 'दोहराना' के साथ अंग्रेज़ी के अर्थ 'स्थानांतरण' और 'व्याख्या' को रखते हैं। अर्थात् दो भाषाओं का होना आवश्यक हो जाता है। आज हमारी भारतीय भाषाओं में हमें क्या चाहिए ? हमारे अंत:संबंध भाषायी स्तर पर हों या संस्कृति स्तर पर ? इस पर हमें सोचना होगा।

यह सच है कि हमारी भारतीय संस्कृति एक है पर भारत की भाषाएँ बहुत सारी हैं। उनमें अंत:संबंध स्थापित करना भी आवश्यक हो गया है। अब सिर्फ अनुवाद से ही कार्य नहीं चलेगा। अब तो साहित्य के साथ-साथ व्यापार की जानकारी के लिए भी उपभोक्ता की संस्कृति को भी समझना आवश्यक हो गया है। पूरे विश्व में आज बहुराष्ट्रीय कंपनियों के विकास के लिए उनका नेटवर्क बहुत महत्वपूर्ण बनता है। उनकी आपसी स्पर्धा में भी अनुवाद की भूमिका महत्वपूर्ण बन जाती है। आज S.L. To T.L. की बजाए S.C. [Source Culture] to T.C. [Target Culture] महत्वपूर्ण बन गया है। विश्वबाज़ार पर कब्ज़ा पाने के लिए व्यापार और उपभोक्ता तथा व्यापार के लिए भाषा और कॉल सेंटर्स

महत्वपूर्ण बनते जा रहे हैं। अपना नेटवर्क चुस्त किए बगैर 'सैम अंकल' अपने बाज़ारवाद को कैसे मज़बूत कर सकता है ? सूचना प्रौद्योगिकी ज्ञान हमें अंग्रेज़ी से मिलता है तो इसका अनुवाद करते समय विषय और भाषा दोनों का महत्व बढ़ जाता है। यह स्थिति सिर्फ अपने देश की ही नहीं बल्कि दुनिया की बहुत सारी भाषाओं की भी है, जैसे फ्रेंच, जर्मनी, जापानी, चाइनीज़ आदि। इन सबमें विज्ञान और वैज्ञानिक खोजें प्रचुर मात्रा में हैं पर केंद्र में अंग्रेज़ी ही है। हमें चाहिए कि इस विज्ञान को हम हिंदी में लाएँ और अपनी भाषाओं के अंत:संबंधों में हिंदी भाषा के अनुवाद के ज़रिए आदान-प्रदान करके अपने अंत:संबंधों को मज़बूत बनाएँ।

आज का ज्ञान अंतरअनुशासनिक बनता जा रहा है। एक भाषा और विषय में रहते हुए वह उससे बाहर भी चला जाता है जैसे- 'रासायनिक खाद्य और हमारी खेती', 'बाज़ारवाद और हमारी भाषाएँ', 'सब्जी में रसायन तत्व', 'विज्ञापन और हमारी संस्कृति', 'कंप्यूटर और हमारी भाषाएँ', 'अध्यात्मशास्त्र और विज्ञान', 'भूमंडलीकरण और तीसरा विश्व', 'जहाज तोड़ने की व्यवस्था और रासायनिक कचरा', 'मुक्त व्यापार और पर्यावरण', 'ध्यान, विज्ञान और जीवन' आदि- ये बातें विज्ञान और वाणिज्य के क्षेत्र में भी हो रही हैं। इंटरनेशनल फेडरेशन ऑफ ट्रांसलेटर्स- अमेरिका का आयोजन उनके नेटवर्क सूत्रों को व्यक्त करता है, यह भी अमेरिकन वैज्ञानिकों की ज़रूरत के रूप में ही है। भू-विज्ञान का अध्ययन जहाँ जहाँ 'भू' है उन सबको प्रभावित करता है पर यह प्रभाव हर देश की भौगोलिकता में उसकी भाषा में व्यक्त होता है क्योंकि प्रतिभा किसी भी विषय की हो, किसी एक देश की बपौती नहीं होती। पेनसिलिन की खोज तो इंग्लैंड में हुई, पर बाद में अमेरिकन वैज्ञानिकों ने उस पर गहन अध्ययन किया और समस्त संसार को उसका लाभ मिला। 'पहले विश्व' ने अपने वैज्ञानिकों को विश्व भर की सूचना-प्रौद्योगिकी के बारे में जानकारी प्रदान करने के लिए अनुवादों की बेहतरीन व्यवस्था की है। विश्वभाषाओं से उन्हें अमेरिकन इंग्लिश में लाया जाता है। वाया स्टेच्यू ऑफ लिबर्टी यह जानकारी बिल गैट्स कंप्यूटर में फिट करके वैबसाइट बनाते हैं और इंटरनेट पर सब जानकारी अंग्रेज़ी में ही उपलब्ध होती है। लेकिन हमारी सामान्य जनता का अंग्रेज़ी ज्ञान भी सामान्य ही है। समस्या यह है कि सूचना संरचना, ज्ञान, टैक्नोलॉजी सामान्य जन तक कैसे पहुँचाई जाए ? ग्लोबलाइजेशन के ग्लोब में हमारी हिंदी तक अगर यह ज्ञान हम युद्धकीय स्तर पर लाएंगे तो अन्य भारतीय भाषाओं तक उसे पहुँचाने में हमें आसानी ही होगी। विश्व-सभ्यता के विकास में अनुवादक की भूमिका महत्वपूर्ण बन जाती है। हमें दोहरी नीति अपनानी

होगी- एक हमारी हिंदी भाषा को अलग-अलग विषयों की भाषा बनाकर उसका विकास करने की तथा दूसरे स्तर पर हमारी भारतीय भाषाओं के अंत:संबंधों में इस ज्ञान को हमारी भारतीय भाषाओं में पहुँचाने की, जिससे हमारी स्थानीय भाषाएँ भी समृद्ध हो सकेंगी।

केंद्रीय हिंदी निदेशालय, दिल्ली, सब भारतीय भाषाओं के आदान-प्रदान मजबूत बनाने के लिए अलग-अलग योजनाएँ बनाकर कार्य कर रहा है। हिंदी और अन्य भारतीय भाषाओं के अंत:संबंधों द्वारा ही यह ज्ञान अलग-अलग भाषाओं में पहुँचाया गया है। कोंकणी-हिंदी विकास के लिए भी निदेशालय ने वाचन-पुस्तिका बनाई है। हिंदी-कोंकणी भाषा की कैसेट्स भी बनी हैं। कोंकणी हिंदी स्वयंशिक्षक का कार्य भी पूरा हो गया है। हमारे संविधान की अठारह भाषाओं में शब्दकोश बनाकर उसमें संस्कृत, हिंदी के शब्दों के साथ उन भाषाओं के पर्याय नागरी लिपि में दिए गए हैं। इस भारतीय भाषा कोश से हमारी भाषाओं में समानता की खोज करना आसान हो जाएगा। वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग भी अलग विषयों में तकनीकी या प्रशासनिक शब्दावली के लिए वर्कशॉप या सेमिनार करवा के अन्य भारतीय भाषाओं को समृद्ध बनाने का कार्य कर रहा है। tdil Technology Development for Indian Languages - विश्वभारत के सपने को कार्यान्वित करने के प्रयास कर रहा है। उनके Vision Statement में Short Term Goals, Mid Term Goals और Long Term Goals कार्य अपने Coil-Net Centres के द्वारा कर रहा है जिससे हमारी भारतीय भाषाएँ समृद्ध होंगी, साथ साथ हमारी नागरी लिपि कंप्यूटर में जाकर विश्व की भाषाओं के साथ तालमेल मिलाने में कामयाब भी हो जाएगी। हाँ, उसका स्वरूप बदलता जाएगा।

कोंकणी भाषा में अनुवाद की स्थिति और संभावनाएँ :

कोंकणी भाषा में अनुवाद कार्य स्रोत भाषा से लक्ष्य भाषा में हुआ है तो साथ ही अंग्रेज़ी को माध्यम बनाकर भी अनुवाद का कार्य हुआ है। अर्थात 'तीसरी भाषा' को लेकर जो अनुवाद हुए हैं उनकी जानकारी हमें दो पुस्तकों में मिलती है।

1. **साहित्य शिल्प** - ले. पांडुरंग भांगी, नागेश करमली, चंद्रकांत केणी आदि।
2. **साहित्य नियाल : अंतरंग आनी काया** रूपां. - डॉ. किरण बुडकुले।

इनमें अनुवाद कार्य पर प्रकाश डाला गया है। कोंकणी में विदेशी भाषा से जो कार्य हुआ है उनके नाम इस प्रकार हैं।

फ्रेंच-कोंकणी 1. मूल लेखक - रोमॉ रोलॉ
अनु. डॉ. मनोहर राय सरदेसाय
- 'विवेकानंद चरित्र'

2. मूल लेखक - मोलिएर
अनु. वामन रघुनाथ वर्दे वालावलीकर-
शणै गोंयबाब
- 'मोगाचे लग्न' [नाटक]
3. आचार्य रामचंद्र शंकर नायक - राणू नायक
-'दामू कुराडो', 'एक हज़ार आनी तेईस',
'सोनुदादालो संवसार',
4. मू.ले. - आंत्वान द.सेंत एक्झयूपेरी
अनु. माधवी सरदेसाय
-'माणकुलो राजकुंवर'

पुर्तगाली-कोंकणी

1. मू.ले. - Frei Luisde
अनु. शांतराम हेदो
-'यात्रीक'
2. मू.ले. - फेर्नांद पिसोवा
अनु. प्रो. ऑलिविन्यु गॉमिश
'संदेश'
3. मू.ले. - फेर्नांद पिसोवा
अनु. पांडुरंग भांगी
-'तारवटी'

अंग्रेज़ी - कोंकणी-

1. मू.ले. - जॉर्ज ओर्वेल - `Animal Farm'
अनु. प्रो. ऑलिविन्यु गॉमिश
'मोनज़ाती घरभाट'

कोंकणी-पुर्तगाली-

1. Onde O Moruoni Canta
[`Washerwoman' bird sings]
Goa Moruoni is Moddrollnni
(कहानी संग्रह)
मू.ले. - दामोदर मावजो, मीना काकोडकार,
चंद्रकांत केणी, उदय भेंब्रे, शीला कोळंबकार,
प्रकाश पर्येकार....
अनु. आल्बेर्टो नरोन्या

संस्कृत-कोंकणी-

अनु. सुरेश गुंडू आमोणकार
-'श्री भगवंतान गायिल्लें गीत'
[प्रस्तावना, मूल संहिता-संस्कृत-, कोंकणी समश्लोकी पद्य आनी गद्य, अणकार, अन्वय, अर्थ, टिपो, विवेचना सयत]

गुजराती-कोंकणी-

1. मू.ले. झवेरचंद मेघाणी-माणसाईना दीवा-
   अनु. रवींद्र केळेकार
   -'आनी तांका मनशांत हाडले'
   -दिवा स्वप्न-- 'दिसा सपन'
2. मू.ले. कुंदनिका कापडिया
   अनु. चंद्रकांत केणी
   -'सात पावलां मळबांत'
   [सात पगला। आकाशमां]

हिंदी-कोंकणी-

1. अनु. रवींद्र केळेकार
   महात्मा गांधी एक जीवनी
2. अनु. पांडुरंग भांगी
   आषाढांतलो एक दीस'
3. नागेश करमली - 'आधे अधूरे'
4. रमेश वेळुस्कार-'अंधायुग'
5. प्रभाकर नाडकर्णी - 'चित्रलेखा'
6. प्रभाकर नाडकर्णी - 'हांव एक बुदवंत'
   [शरद जोशी]

कोंकणी-हिंदी-

1. 'कार्मेलीन' - नारायण सेजवलकर
2. 'शिखर कथा-कोश' - संपा. कमलेश्वर
3. 'कोंकणी काव्य-चेतना'
4. 'वळेसर शेर शायरीचो'] प्रभाकर नाडकर्णी
5. 'गज़लप्रभा'] प्रभाकर नाडकर्णी
6. 'पाडगांवकार की काव्य चेतना'-चंद्रलेखा

मलयालम्-कोंकणी- 1. मू.ले.-एन.टी.वासुदेव नायर
अनु. गोकुलदास प्रभु
'चवकी'
2. 'चवकी'- मू.ले. वैक्कम मुहम्मद बशीर
अनु. आर.एस. भास्कर
'म्हज्या आजाक एकी हस्ती आशिल्ली'

बंगाली-कोंकणी- 1. 'दोगी भयणी'-दुईबोन
अनु. रवींद्र केलकार
मू.ले.-रवींद्रनाथ टैगोर

कन्नड़-कोंकणी- यशवंत पालेकार
अनु. 'मातयेचो मोग'

तमिल-कोंकणी- अनु. प्रो. आर. के.राव
-'तिरुक्कुरळ तिरुवळ्ळुवर'

संभावनाएँ - हमारे बहुभाषिक देश में अनुवाद राष्ट्रीय एकता को सुदृढ़ करने वाला एक तत्व है। हमारी सब भाषाएँ अपनी हैं। यह अपनापन हमें अपनी भाषाओं को समृद्ध बनाने के लिए राह दिखा सकता है। कोंकणी-हिंदी, हिंदी-कोंकणी ही नहीं, हमें तो अपनी सब भारतीय भाषाओं में अंत:संबंध स्थापित करना है। जनता तक विज्ञान का ज्ञान अपनी भाषाओं के माध्यम से पहुँचना चाहिए। हमारी राष्ट्रीय एकता के लिए हमें नियोजन करना होगा, वह भी अपनी ज़मीन और आम लोगों की सायकी को समझकर। हम अब भी अपनों से अपरिचित ही हैं। अपनों तक पहुँचने का मार्ग भी होना चाहिए जो हमारे लोगों के कनेक्शन, क्रॉसकनेक्शन, क्रॉस रोड्स से होकर, हमारे बहुभाषिक देश में अपने राजमार्ग से गुज़रता हुआ मार्गों से मिलता हुआ, लोगों के संपर्क से विकसित होता हुआ हमें विश्व का ज्ञान, विज्ञान दे और साथ-साथ हमारी अस्मिता को खड़ा करने में हमारी मदद भी करे। आपसी सूझबूझ बढ़ाने का रास्ता हमारे देश में ही नहीं, पूरे विश्व में अनुवाद ही है। हमारी संस्कृति आत्मतुष्ट संस्कृति नहीं है पर समम्वय और आत्मसातीकरण हमारी पहचान है।

हमें अपनी संस्कृति पर निर्भर रहना है। इसलिए हमें सिर्फ हिंदी-कोंकणी ही नहीं वरन अपनी सब भाषाओं में अंत:संबंध स्थापित करना है। उसी के ज़रिए एशियाई लोगों से जुड़ना है, वहाँ से विश्व तक पहुँचना है। अगर हम यह कार्य नहीं कर पाए तो पिछड़ जाएंगे। प्रो. रवींद्रनाथ श्रीवास्तव जी की संस्कृति की परिभाषा देकर अपनी बात को समाप्त करती हूँ- "आधुनिकीकरण आज के प्रसंग में अभिव्यक्तिपरक संस्कृति के प्रगतिपरक संस्कृति में रूपांतरण की विधि है।" कहने की ज़रूरत नहीं कि हमारी संस्कृति अभिव्यक्तिपरक है।